खण्ड-7, अंक-1, वर्ष-2019, मु0प्र0 127-130
D.O.I.: 10.22445/avsp.v7i1.22

वैज्ञानिक/ज्ञानवर्धक आलेख

भारतीय परम्परा और आधुनिकता का समाजशास्त्रीय अध्ययन-वैज्ञानिक दृष्टिकोण

वन्दना
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
vandana2076@gmail.com

प्राप्त तिथि–10.03.2019, स्वीकृत तिथि–13.05.2019

सार– भारतीय समाज में परम्परा और आधुनिकता एक आलोचनीय एवं महत्वपूर्ण मुद्दा है। भारतीय सन्दर्भ में परम्परा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य की आवश्यकता है क्योंकि भारतीय समाज में अनेक मूल्यवान, स्वस्थ, परम्परायें विद्यमान हैं। हमे मूल्यवान, पुरानी परम्पराओं को संरक्षित करना चाहिए जो व्यक्ति एवं समाज के लिए उपयोगी हो। भारतीय समाज के लिए परम्परा और आधुनिकता के बीच स्वस्थ सम्बन्ध अत्यधिक महत्व रखता है। इस आलेख का उद्देश्य भारतीय सन्दर्भ में परम्परा एवं आधुनिकता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। प्रस्तुत लेख में परम्परा और आधुनिकता की अवधारणा सम्बन्ध, इसके भारतीय समाज पर सामाजिक प्रभाव के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विस्तृत विवरण दिया गया है।

बीज शब्द– परम्परा, आधुनिकता, मूल्य और संस्कृति परिवर्तन और निरन्तरता बुनियादी संरचना, आधुनिकीकरण

Sociological study of Indian tradition and modernity-scientific overview

Vandana
Associate Professor, Department of Sociology
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
vandana2076@gmail.com

Abstract- Tradition and modernity is a critical and important issue of Indian society. Tradition is a collection of all thoughts of previous days and modernity is a collection of all thoughts of present days. In reference of Indian society the need of harmonies tradition with modernity because Indian society has many valuable and healthy traditions. We should preserve perfect valuable old tradition, beneficial for person and society. The healthy relationship between tradition and modernity is most significant for Indian society. The article embodies detailed description of concept of tradition and modernity relationship, and its social impact on Indian society.

Key words- Tradition, modernity, value and culture, change and continuity, basic structure, modernization

1. **परिचय–** भारतीय समाज विविधताओं से भरा पड़ा है, जहाँ अनेक प्रकार की परम्परायें पाई जाती हैं। इसीलिए भारतवर्ष को परम्पराओं का देश कहा जाता रहा है। यहाँ विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, जाति के लोग एक ही देश में रहते हुए अलग–अलग परम्पराओं का निर्वहन करते हैं। 'शील्स के अनुसार भारतीय समाज न तो पूर्णतया परम्परागत है और न ही आधुनिक समाज पूर्णतया परम्परामुक्त। परम्परा सदैव से अतीत एवं वर्तमान की बीच एक कड़ी का काम करती है'।[1] परम्परा और आधुनिकता दोनों ही सुनिश्चित अवधारणायें नहीं हैं क्योंकि कोई भी चीज कब तक परम्परागत मानी जायेगी और कब किसी चीज में आधुनिकता प्रारम्भ होती है, इस बात का कोई निश्चित लकीर खींचना समाज वैज्ञानिकों के लिए अत्यधिक कठिन कार्य है, परम्परा और आधुनिकता द्विभाजक शब्द नहीं है, बल्कि परम्परा और आधुनिकता के बीच अनवरतता की स्थिति पाई जाती है'।[2] परम्परा एक सापेक्षिक शब्द भी है, कोई चीज एक समाज के लिए परम्परागत है तो आवश्यक नहीं कि वह दूसरे समाज के लिए भी परम्परागत हो इसलिए परम्परा तथा आधुनिकता को समाज विशेष के सन्दर्भ में समझना होगा।

2. **परम्परा का स्वरूप–** परम्परा पूर्ववर्ती दिनों में पाये जाने वाले विचारों का संकलन है और आधुनिकता भी वर्तमान में पाये जाने वाले विचारों का संकलन है।

"In its literal sense, tradition refers to any human practice belief institution or artefact which is handed down from one generation to the next."[3]

इस तरह से परम्परा एक अमूर्त सामाजिक संरचना है जिससे समाज पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। परम्परा एक तरह की सामाजिक विरासत है जिसे समस्त लोग एक लम्बे समय में बनाते हैं। परम्परायें मौखिक होती हैं और यही परम्परायें जो लिखित रूप में आती हैं वही सामाजिक कानून बन जाती हैं। परम्परा का स्वरूप अमूर्त होता है जो एक सापेक्षिक अवधारणा है। परम्पराओं का सम्बन्ध अभौतिक संस्कृति से है, परम्पराओं के अन्तर्गत विकास एवं परिवर्तन दोनों धीरे–धीरे होती है। समाज में समय के साथ स्वतः बनती बिगड़ती रहती है। परम्परा समाज के स्थायित्व का पोषक है जो व्यक्ति के व्यवहारों पर नियन्त्रण स्थापित करता है।

3. **परम्परा के प्रकार–** रॉबर्ट रेड फील्ड ने परम्पराओं को दो भागों में बाँटा है–

(1) बृहत् परम्परा
(2) लघु परम्परा

वे परम्परायें जिनका उल्लेख हमारे धर्मग्रन्थों में मिलता है, जिनकी विषय–वस्तु शास्त्रीय एवं सांस्कृतिक है और जो लिखित है, अधिक व्यवस्थित एवं चिन्तनशील है तथा जिनका फैलाव सारे देश में है, बृहद् परम्परायें कहलाती हैं, जैसे होली, दीवाली आदि, और वे परम्परायें जिनका उल्लेख धर्म ग्रन्थों में नहीं मिलता जो अलिखित, अशास्त्रीय, कम व्यवस्थित, कम चिन्तनशील एवं स्थानीय होती हैं, लघु परम्परायें कहलाती हैं जैसे स्थानीय कर्मकाण्ड, स्थानीय लोकगीत, स्थानीय रीतिरिवाज आदि। मैकिम मैरियट ने भी सार्वभौमीकरण और संकीर्णीकरण की प्रक्रिया द्वारा परम्पराओं को स्पष्ट किया है।

भारतीय समाजशास्त्रियों में श्यामाचरण दुबे, डी0पी0 मुखर्जी, डी0एन0 मजूमदार, योगेश अटल, प्रो0 योगेन्द्र सिंह आदि समाजशास्त्रियों ने भी परम्परा जैसे विषय पर अपना दृष्टिकोण रखा है। एस0 सी0 दुबे ने परम्पराओं को पाँच भागों में बाँटा है– (1) शास्त्रीय (2) क्षेत्रीय (3) स्थानीय (4) पश्चिमी (5) उभरती हुई राष्ट्रीय परम्परा डी0पी0 मुखर्जी ने परम्परा की व्याख्या करते हुए बताया कि परम्परा एक सामाजिक व्यवहार है जो व्यक्तियों के व्यवहार को मानक एवं मूल्य प्रदान करता है इसका तात्पर्य अतीत के काल्पनिक या वास्तविक व्यवहार को निरन्तरता देना होता है । इसके अन्तर्गत धर्म, विधियाँ और प्रतीकात्मक व्यवहार आते हैं। परम्परा की अवधारणा को भारतीय और विदेशी दोनों परम्पराओं से सम्बन्धित करते हैं। परम्परा एक प्रकार का संश्लेषण है जिसके अन्तर्गत भारतीय संस्कृति के साथ ही विदेशी संस्कृति एवं मान्यताओं का भी समावेश होता है। परम्पराओं का वर्गीकरण करते हुए प्राथमिक, द्वैतीयक, तृतीयक तीन भागों में वर्गीकृत भी किया है। प्रो0 डी0 एन0 मजूमदार ने परम्पराओं को वर्तमान सन्दर्भ में व्याख्या की है उनके अनुसार परम्परायें अतीत का वर्तमान से सम्बन्ध रखती हैं। वर्तमान की कोई व्याख्या परम्परा को वर्तमान के साथ समायोजन करना पड़ता है, क्योंकि परम्परा में परिवर्तन निहित है, परम्परायें जड़ होती हैं। अपने अस्तित्व को खत्म कर देती हैं। परम्परायें नृजातीयता हैं, परम्परायें हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं। परम्पराओं में परिवर्तन के दो श्रोत स्पश्ट दिखाई देते हैं– (1) आन्तरिक श्रोत, (2) बाहरी श्रोत। आन्तरिक श्रोत के अन्तर्गत लघु संस्कृति को वृहद संस्कृति में बदलना था वृहद संस्कृति का लघु संस्कृति में परिवर्तित होना परम्पराओं में परिवर्तन का प्रमुख आन्तरिक श्रोत रहा है। वहीं बाहरी श्रोत के अन्तर्गत युद्ध, ऐतिहासिक सम्पर्क, राजनैतिक प्रमुख या आधीनता, अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास, बाह्य संस्कृति से सम्पर्क आदि आते हैं। उदाहरणार्थ, पश्चिमीकरण के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं में होने वाले परिवर्तन का बाहरी श्रोत या कारक है।

4. **आधुनिकता का स्वरूप–** ''आधुनिकता का विकास 17वीं शताब्दी में यूरोप में हुआ था। यह युग यूरोप का पुनर्जागरणकाल रहा है जहाँ यूरोप के सभी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये। इस युग में भाप के इंजन का आविष्कार उत्पादन में मशीनों का प्रयोग तथा औद्योगकरण का उदय हुआ जिसके फलस्वरूप उत्पादन वृहद पैमाने तथा तीव्र गति से होने लगा। नये द्वीप महाद्वीप की खोज हुई व्यापार वाणिज्य के क्षेत्र का विस्तार हुआ। बैंक साख समुद्रा का प्रचलन बढ़ा। यातायात एवं संचार के क्षेत्र में तीव्रगति से विकास हुआ। दर्शन, शिक्षा तथा बौद्धिक क्षेत्र में तर्क का विकास हुआ। आधुनिकता ने पूँजीवाद को जन्म दिया। पूँजीवादी समाज में असमानता एवं शोषण का उदय हुआ।[4] आधुनिकता की प्रक्रियाओं में तीव्रता लाने वाले कारकों में मुनाफाखोरी की विचारधारा, राजनीतिक क्रान्तियाँ, पूँजीवादी संस्कृति की जवाबी संस्कृति समाजवादी व्यवस्था, उदारवादी विचार धारा की जीत आदि रही है। समाजशास्त्र के अन्तर्गत आधुनिकता एक निश्चित अवधारणा है जो इतिहास के एक निश्चित काल से (Epoch) से जुड़ी है। भारतीय

इतिहास को प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल में विभाजित करें तो आधुनिकता का सम्बन्ध आधुनिक काल से है किन्तु आधुनिकता का अर्थ केवल काल से नहीं है बल्कि आधुनिकता का सम्बन्ध कुछ मूल्यों और विचारधाराओं से भी जुड़ा है। 'दीपांकर गुप्ता ने अपनी पुस्तक 'मिस्टेकेन माईनिटी में आधुनिकता से जुड़े कई भ्रामक विचारों का खण्डन किया जिसके अन्तर्गत उन्होने बताया कि तकनीकी यन्त्र ही आधुनिकता नहीं है केवल उपभोक्तावाद भी आधुनिकता नहीं है। आधुनिकता बहु आयामी भी नहीं है। भारतीय सन्दर्भ में आधुनिकता की विशेषता के अन्तर्गत व्यक्ति की मान–मर्यादा, सार्वजनिक मापदण्डों का पालन, व्यक्तिगत उपलब्धि का महत्व, सार्वजनिक जीवन में जिम्मेदारी, अन्तर आत्मपरकता यदि ये लक्षण भारतीय समाज में आ जाते हैं तो भारत में आधुनिकता है।[5] अर्थात् आधुनिकता का सम्बन्ध मात्र प्राद्योगिकी उपभोक्तावाद, उच्च संचार व्यवस्था से नहीं है अर्थात् आत्मपरकता से भी है अर्थात् जहाँ लोग समानता और भाईचारा से बंधे होते हैं। काल मार्क्स ने अधिक से अधिक उत्पादन करना ही आधुनिकता माना है अर्थात मार्क्स ने आर्थिक निर्धारणवाद के आधार पर आधुनिकता को पण्यीकरण (Commodification) की अवधारणा द्वारा परिभाषित है। दुर्खीम ने आधुनिकता को सावयवी सुदृढ़ता के सन्दर्भ में देखने का प्रयास किया है। उनका मत है कि यान्त्रिक समाज धीरे–धीरे बदल कर सावयवी समाज का रूप लेता है, यांत्रिक समाज की सामूहिक चेतना बदलकर संविदा समाज का रूप लेती है। समाज जितना यांत्रिक होगा स्तरीकरण उतना ही कम होगा। समाज जितना सावयवी होगा स्तरीकरण उतना ही अधिक होगा। दुर्खीम के अनुसार आधुनिकता वह है जिसमें अधिकतम स्तरीकरण पाया जाता है। मैक्स वेवर के अनुसार आधुनिकता का केन्द्रीय आधार युक्ति मूलकता एव विवेकपूर्णता है। टालकॉट पारसन्स ने आधुनिकता को मूल्यों की गठरी माना है। आधुनिक समाज वह है जिसे भावात्मक तटस्थता विशिश्टता सर्वव्यापकता उपलब्धि और सामूहिकता के मूल्य होते हैं। आधुनिकता की सामान्य विशेषताओं में व्यापकता, उद्विकास का परिणाम, पूँजीवाद, औद्योगीकरण, धर्मनिरपेक्षता, उपभोक्ता वस्तुओं की प्रचुरता, विभिन्न जीवन शैलियाँ, सामाजिक सम्बन्धों, संघर्षों का कारण शक्ति, तकनीकी तन्त्र, नीवनतम, एकाकीपन, प्रतियोगिता, वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण आदि शामिल हैं।

5. **परम्परा एवं आधुनिकता के बीच सम्बन्ध–** भारत के सन्दर्भ में यदि हम बात करें तो हम पाते हैं कि आधुनिकता के जो लक्षण यूरोप और अमेरिका में मिलता है वह यहाँ नहीं है क्योंकि कहीं–कहीं परम्परा आधुनिकता में परिवर्तित हो गयी तो कहीं आधुनिकता परम्परा के प्रभाव में आकर अपना स्वरूप ही परिवर्तित कर लिया है। एम0 एन0 श्रीनिवास ने भारत में आधुनिकता की उपस्थिति को ब्रिटिश काल से जोड़ा है और ब्रिटिश काल में जो आधुनिकता दिखाई देती है उसमें बेवर की विवेक संगतता तथा मानवतावाद की अधिकता रही है। पश्चिमीकरण, निवास के आधार पर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। योगेन्द्र सिंह ने अपनी पुस्तक "मॉडर्नाईजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन" के अन्तर्गत आधुनिकता का भारतीय परम्पराओं पर क्या प्रभाव पड़ा है इनका सैद्धान्तिक विश्लेषण करते हुए आधुनिकता को सार्वभौमिक और उद्विकासीय बताया है। आधुनिकता की व्याख्या में मूल्य एवं संस्कृति को महत्व दिया है तथा मूल्यों से विवेक, तकनीक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण उनकी व्याख्या का केन्द्र है। उन्नीसवीं शताब्दी की पाश्चात्य सांस्कृतिक परम्परा भारत में व्याप्त हो गयी जो कि अपने मूल्य परिवेश संरचना में हिन्दू एवं इस्लाम धर्म के पारम्पिरिक सांस्कृतिक प्रतिमानों से भिन्न थी जो भारतीय परम्परा के आवश्यक गुणों में से अधिकांश के विलकुल विपरीत थी । पाश्चात्य परम्परा कानूनी तार्किकता पर आधारित मनुष्य व समाज के मध्य संविदात्मक–व्यक्तिवादी सम्बन्ध को मान्यता देता था । कानूनी न्याय व नागरिक अधिकारों के मामलों में समानता, समता एवं सार्वभौमवाद के मूल्यों को प्रोत्साहित किया न कि प्रदत्त प्रस्थिति व संस्तरण के मूल्यों को।[6]

भारतीय समाज में परम्परा और आधुनिकता के तत्व इस प्रकार घुल मिल गये हैं कि इन दोनो को पृथक कर सकना कठिन है। ''एस0 सी0 दुबे के अनुसार, भारत में परम्परा और आधुनिकता विरोधाभास के रूप में मौजूद हैं परम्परा प्रदत्त पदों की चाहती है तो आधुनिकता अर्जित पदों की पुष्टि करती है। परम्परा भावात्मकता से जुड़ी है तो आधुनिकता तटस्थता से, आज भारत परम्परा और आधुनिकता की दुविधा में भी पड़ता दिखाई दे रहा है। उसके सामने द्वन्द्व यह है कि वह किस सीमा तक परम्परा को छोड़े और किस सीमा तक आधुनिकता को अपनायें।[7] डी0 पी0 मुखर्जी ने परम्परा और आधुनिकता को एक नई दिशा दी। उनका मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक वस्तु में द्वन्द है परम्परा और आधुनिकता में भी यही द्वन्द्व है। अपने आप में न तो आधुनिकता सही है और न ही परम्परा भी दलित विरोधी है। इसलिए हमें भारत में नई परम्परा बनानी होगी जिसमें मार्क्सवाद, वेदान्त, प्रजातान्त्रिक मूल्यों को शामिल करना होगा। मिल्टन सिंगर ने अपनी पुस्तक "ट्रेडिशनल इण्डिया स्ट्रक्चर एण्ड चेन्ज" में यह बताया है कि 'भारतीय समाज की संस्तुति के कई पहलू बदल गये हैं परन्तु संस्कृति की बुनियादी संरचना और प्रतिमान नश्ट नहीं किया है। आधुनिकता के प्रभावों ने भारत को नये विकल्प दिये हैं और वरण के अवसर दिये हैं। समाज के लचीलेपन के कारण आधुनिकता के पहलुओं को अपना लिया गया है। परम्पराओं ने जहाँ अपनी पहचान बना रखी है वहीं नूतनता को भी स्वीकार किया है। मेकिम मेरियट के अनुसार परम्परा और आधुनिकता को अन्तः क्रिया के माध्यम से समझा जाना चाहिए। योगेन्द्र सिंह का मानना है कि यह आवश्यक नहीं है कि आधुनिकता अनिवार्य रूप से परम्परा को कमजोर ही करती है। कई बार आधुनिकता के हाथों परम्परा अत्यधिक शक्तिशाली हो जाती है।[8] उदाहरणार्थ– जाति, लिंग से सम्बन्धी परम्परागत विशेषतायें आधुनिकता के प्रभाव से परिवर्तित एवं सशक्त हुई।

6. **भारतीय समाज पर आधुनिकता का प्रभाव–** भारतीय समाज पर आधुनिकता के प्रभाव से सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तनों को

देखा जा सकता है। समाज में वैज्ञानिक व प्रौद्योगिक विकास, जीवन स्तर सुधार, कृशि का आधुनिकीकरण, समाज सुधार प्रोत्साहन, शिक्षा का प्रचार प्रसार, लोकतान्त्रिक, नेतृत्व का विकास, सामाजिक मूल्यों एवं मनोवृत्तियों, जागरूकता में बढ़ोत्तरी, आधुनिकता का प्रतिफल है जो आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, जैसी प्रक्रिया द्वारा चलायमान है। उल्रीच बैक ने आधुनिकता की संस्कृति को खतरे की संस्कृति कहा है। उनका मानना है कि शास्त्रीय युग में जो आधुनिकता थी वह औद्योगिक थी, आज की आधुंनिकता खतरे की आधुनिकता है। आज की आधुनिकता 19वीं शताब्दी की आधुनिकता से अलग है। आज की आधुनिकता में व्यक्तिकरण अत्यधिक सीमा तक पाया जाता है। व्यक्ति के ऊपर कोई लगाम नहीं, कोई दबाव नहीं है। वे जिस कारखाने, उद्योग को चलाते हैं उनका समान पर क्या प्रभाव पड़ता है उनको व्यक्तिगत स्वार्थ में नजर अन्दाज कर देता है और ऐसे समाज का निर्माण हो रहा है जो आने वाले पीढ़ियों के अस्तित्व को भी खत्म कर देगा। आधुनिकता की व्याख्या के विविध आयाम हैं जो बेवर के विवेक संगत, दुर्खीम के उच्च स्तरीकरण माक्स के पव्यीकरण पारसन्स के प्रतिमान चरों पर आधारित मूल्यों के साथ चलकर आज फास्ट फूड , रेस्टोरेण्ट क्रेडिट कार्ड, विनाशक के सन्दर्भ में देखा जाता है। जर्मनी के समाजशास्त्री हैबरमास ने आधुनिकता को एक अधूरा प्रोजेक्ट कहा है क्योंकि आधुनिकता के वास्तविक विशेषताओं को समाज में लाना आसान कार्य नहीं है।[9]

7. **निष्कर्ष**– परम्परा और आधुनिकता का केन्द्रीय आधार मूल्य है इन्हीं मूल्यों के अनुसार जाति, परिवार, नातेदारी, गोत्र, धर्म, शिक्षा आदि का प्रकृति एवं स्वरूप बनता है। 'निःसन्देह भारत की परम्परा में परिवर्तमन तेजी से हो रहा है लेकिन आधुनिकता का स्तर बहुत ऊँचा नहीं है परन्तु प्रौद्योगिकी आधुनिकीकरण बहुत नहीं है, सामाजिक–सांस्कृतिक आधुनिकीकरण की गति बहुत धीमी है'।[10] परम्परा और आधुनिकता की प्रासंगिकता पर समाज शास्त्रीय बहसें होती रही हैं किन्तु आज के भारतीय समाज के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि कही परम्परा को आधुनिकता के साथ समझौता करना पड़ेगा तो कहीं आधुनिकता को परम्परा के साथ। भारतीय समाज का परम्परागत आधार इतना प्रभावशाली है कि आधुनिक आधार उसे पूर्णतः परिवर्तित करने में असमर्थ है।

सन्दर्भ

1. यादव, रामगणेश(2014) भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, ओरिण्ट ब्लैक स्वान पब्लिकेशन्स, पृ0 94।
2. सिंह, जे0 पी0(2008) आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन प्रेन्टिस हाल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृश्ठ 248
3. निकोलस, एवर क्रामी(1994) द पेग्विन डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी, पेग्विन बुक्स, लन्दन, यू0के0, पृ0 432
4. मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ(2015) समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक परिपेक्ष्य, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 256।
5. पाण्डेय, गया(2007) मानव शास्त्रीय सिद्धान्त एवं आधुनिक कान्सेप्ट, पब्लिकेशन्स कम्पनी, नई दिल्ली, मु0पृ0 224–225।
6. सिंह, योगेन्द्र(2006) भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0 206।
7. गुप्ता एवं शर्मा(2003) भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0 206।
8. दोशी, एम0 एल0(2002) आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, मु0पृ0 114–115।
9. वही, पृ0 224–225।
10. हसनैन, नदीम(2018) समकालीन भारतीय समाज, भारत बुक सेण्टर, लखनऊ, पृ0 603।